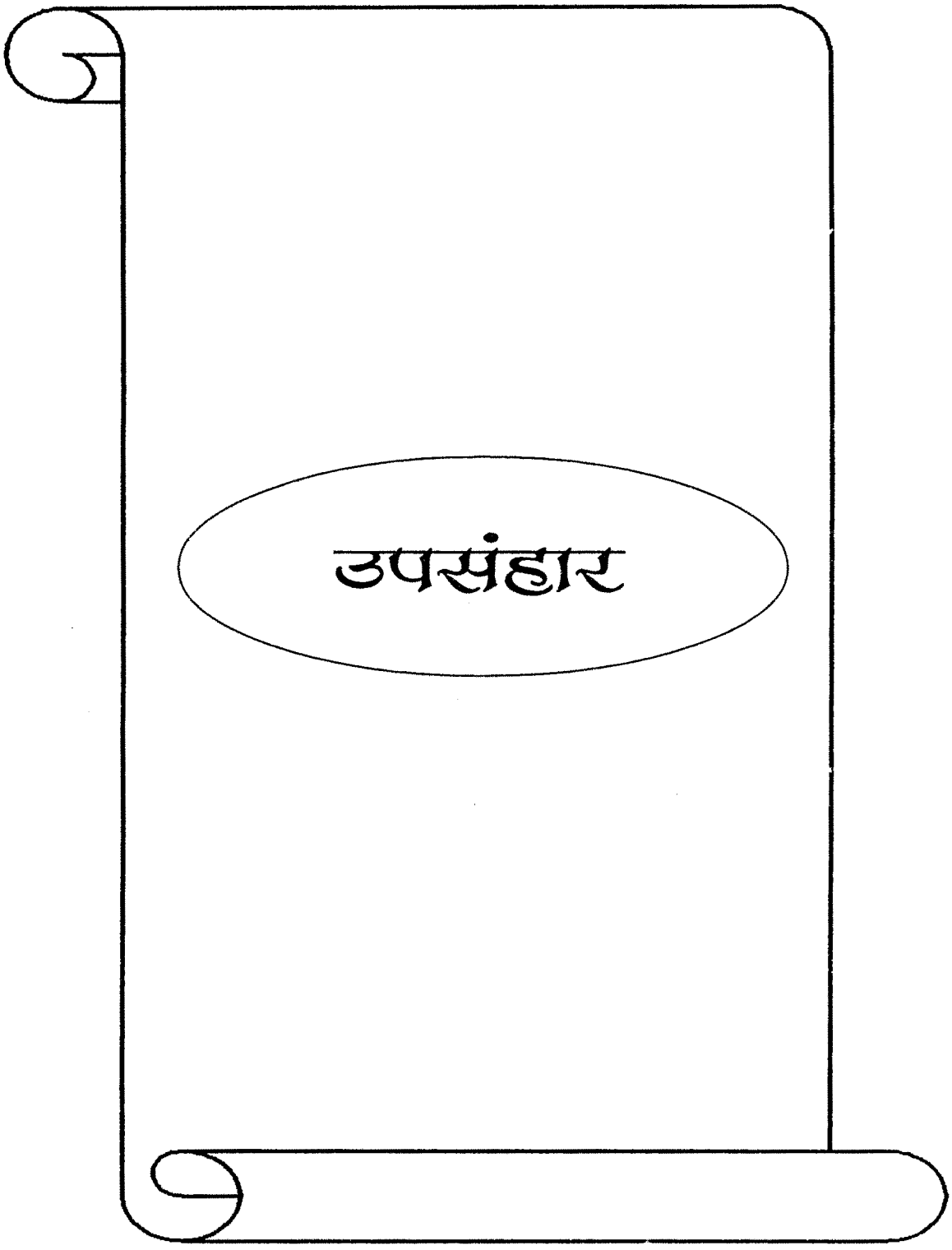
उपसंहार

उपसंहार

''असगर वजाहत के उपन्यास : बदलते मानव जीवन की मीमांसा'' के अध्ययन के उपरांत समन्वित निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं-

असगर वजाहत का व्यक्तित्व संवेदनशील, कलाप्रेमी, परंपरा और आधुनिकता का समन्वयक, अध्ययनशील, हिंदी भाषा प्रेमी, सांप्रदायिक एकता का हिमायती, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और निस्वार्थ समाज-सुधार की भावना से ओत-प्रोत है। असगर जी का बचपन बहुत लाड़-प्यार में बीता है। अनेक लोगों के संपर्क के कारण बचपन से ही समाज के बनते-बिगड़ते नियमों एवं मूल्यों से उनका अनुभवजगत् वृद्धिंगत हुआ है। आदिवासी आदि क्षेत्रों के कार्य से उनके उक्ति और कृति में समानता दिखाई देती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। मानव और मानवतावाद का समर्थन उनकी विशेषता है। फिल्म, नाट्य और साहित्य के माध्यम से उन्होंने सबसे ज्यादा सांप्रदायिक सद्भाव का समर्थन किया है। असगर जी हिंदू-मुस्लिम एकता के सच्चे समर्थक हैं। सांप्रदायिक और सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ उन्होंने धर्मांध राजनीति पर भी अपनी तीखी लेखनी चलाई हुई परिलक्षित होती है।

असगर जी के लेखन क्षेत्र की परिधि विशाल नजर आती है। उन्होंने अनेक भाषाओं और अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनकी रचनाएँ कल्पनारहित यथार्थवादी दृष्टिगोचर होती हैं। असगर वजाहत रचनाकार के साथ-साथ एक सफल नाटककार तथा फिल्म पटकथा लेखक के रूप में भी बहु-चर्चित हैं। इन कार्यक्षेत्रों के साथ-साथ देश-विदेश की यात्राओं के दौरान विभिन्न मानव-जीवन से परिचित होने के कारण उनके अनुभवविश्व की परिधि में वृद्धि हुई है। समाज के ज्वलंत प्रश्नों का चित्रण ही उनके कृतित्व का प्रमुख प्रतिपाद्य होने के कारण तथा सामाजिक कार्य को देखते हुए उन्हें अनेक सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थाओं ने गौरवान्वित किया है। संक्षेप में कहना सही होगा कि उनका व्यक्तित्व मानव समाज के लिए प्रेरक एवं आदर्श है तो कृतित्व मानव को गलत रास्ते से हठाकर सही दिशानिर्देश करनेवाला है।

औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से 'सात आसमान' अत्यंत सफल रचना माननी पड़ेगी। कृति को साकार रूप देने में जिन विधियों, ढंगों, तरीकों और रूढ़ियों का प्रयोग किया जाता है वे सारी बातें औपन्यासिक शिल्प के अंतर्गत आती हैं। 'सात आसमान' शीर्षक, कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल वातावरण, भाषा, शैली और उद्देश्य आदि सभी तत्त्वों के शिल्पगत अध्ययन की दृष्टि से एक सफलतम तथा महत्त्वपूर्ण कृति है। 'सात आसमान' यह शीर्षक आकर्षक होने के साथ-साथ कौतुहलपूर्ण भी है। सात पीढ़ियों के प्रतीक रूप में आए इस शीर्षक का कथावस्तु के साथ गहरा संबंध होने के कारण उसकी सार्थकता और भी बढ़ गई है। दो खानदानों के सात पीढ़ियों का चित्रण और पाँच भागों में विभाजित कथावस्तु के युगानुरूप संगठन में लेखक को विशेष सफलता मिली है। लेखक ने उपन्यास में हर कालखंड़ की ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ उस युगीन मानव के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। पात्रों के चरित्रांकन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ परिलक्षित होता है। मुख्य और सहायक पात्रों के साथ उपन्यास में दर्जनों गौण पात्रों की भरमार दिखाई देती है। सभी पात्रों का सृजन प्रसंगानुकूल और सौद्देश्यपूर्ण है। उपन्यास में लेखक पात्रों की भावना, संवेदना, भीषण अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति में पूर्णतः सफल रहा है।

लेखक ने उचित जगह पर कथोपकथन का सफलतापूर्वक निर्माण किया है। उन्होंने कथावस्तु को सहज, सरल तथा स्वाभाविक बनाने के लिए प्रसंग के अनुकूल कथोपकथन का प्रयोग किया है। कथोपकथन से उपन्यास में सजीवता और रोचकता आई है। घटनाओं, पात्रों और उनके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने के लिए उपन्यास में देश-काल वातावरण का सफल संयोजन हुआ है। उपन्यास में ऐतिहासिक, प्राकृतिक और सामाजिक देश-काल वातावरण विशेष रूप से उभरकर आया है। उपन्यास में उर्दू, भोजपुरी, अवधी, फारसी, बोलचाल की हिंदी के साथ अंग्रेजी और संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी सहजता से किया है। 'सात आसमान' आत्मकथात्मक शैली में लिखा उपन्यास है। इस उपन्यास में उर्दू की प्रसिद्ध किस्सागोई शैली के साथ वर्णनात्मक, पूर्वदीप्ती और प्रतीकात्मक शैली का प्रमुखता से प्रयोग किया है। अतः अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल यह उपन्यास औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से निश्चय ही सफल रचना है।

उपन्यासकार असगर वजाहत ने अपने 'सात आसमान' उपन्यास में समाज के विविध पक्ष और उनमें आ रहे परिवर्तन को उद्‌घाटित किया है। समाज की विभिन्न विशेषताओं को उजागर करना भी उनके उपन्यास का प्रतिपाद्‌य रहा है। भारतीय मानव के सामाजिक जीवन में धार्मिक क्षेत्र बहुत ही संवेदनशील नजर आता है। आज समाज में धार्मिक एकता का प्रयास, चाहे वह परिवार जैसे सीमित क्षेत्र से ही सही, शुरू हो रहा है। स्वातंत्र्योत्तर काल में अर्थ पर आधारित वर्ग संरचना का निर्माण हो रहा है। उच्चवर्गीय लोग भौतिक सुख-सुविधाओं से संपन्न दिखाई देते हैं। ये लोग समाज के लिए होनेवाले अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन दृष्टिगोचर होते हैं। समाज में न्याय-व्यवस्था उच्चवर्गियों के हाथ की कठपुतली बन गई है। न्याय-व्यवस्था में अपराधियों को बचाने के लिए हमेशा एक विशिष्ट वर्ग तैयार होता है जो सच को झूठ और झूठ को सफेद सच साबित करने के लिए तत्पर होता है। प्राचीन काल की तुलना में आज की न्याय-व्यवस्था कमजोर दिखाई देती है। बदलती शिक्षा-व्यवस्था अमीरों के मनमौजीपन तथा दबाव के कारण अपने तत्त्वों से हठ रही है। फलतः शिक्षा जैसे क्षेत्र का पावित्र्य और मांगल्य खतरे में आ रहा है। शिक्षा क्षेत्र का संचालन एक विशिष्ट वर्ग के हाथ में आने के कारण निम्नवर्गीय लोग शिक्षा से वंचित हो रहे हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल में पति-पत्नी के अधिकारों में समानता आ रही है। आज पत्नी अपने पति के कंधे-से-कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में प्रगति कर रही परिलक्षित होती है। बदलते समाज में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के पनपने के कारण बूढ़ों की घोर उपेक्षा हो रही है। ऐसे व्यक्ति अपने अतीत की सुवर्णमयी घटनाओं से विव्हल नजर आते हैं। आज का युवा ध्येयहीनता के कारण भोगवाद की ओर आकर्षित हो रहा परिलक्षित होता है। बदलते मानव समाज में नौकरों के साथ अच्छा बर्ताव करने की पद्‌धति रूढ़ हो रही है, लेकिन पागल आज भी अमानवीय, क्रूरतापूर्ण व्यवहार और अत्याचार से पीड़ित जीवन जीते हैं। स्वातंत्र्योत्तरकालीन समाज के अमीरों में अधिक अमीर बनने की होड़ लगी है। फलतः वह अपने परंपरागत मूल्यों को भूले हुए परिलक्षित होते हैं। शहरों में रहनेवाले लोगों की आबादी में निरंतर वृद्‌धि हो रही है, जिससे शहरों का सामाजिक और पारिवारिक स्वास्थ्य बिगड़ता हुआ नजर आता है। नई पीढ़ी कम श्रम और कम समय में अधिक पैसा कमाने के पक्ष में है। जिससे समाज में विकृत प्रवृत्तियों के साथ-साथ अनेक

नई समस्याओं का उद्‌भव हो रहा है। वर्तमान समाज में औद्‌योगिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में अमूलाग्र विकास हो रहा है। लेकिन यह विकास मूल्य-विरहित हो रहा है। इस विकास को अगर मूल्यों का आधार मिल जाए तो भारतीय मानव के सामाजिक जीवन का भविष्य हमेशा दैदिप्यमान और उज्ज्वल रहेगा।

भारतीय राजनीतिक जीवन में 1226 ई. से मुगलों का प्रवेश हुआ है। भारतवर्ष में मुगलों का शासनकाल साड़े तीन सौ वर्षों तक रहा है और अंग्रेजों के आगमन के बाद मुस्लिमों के कुछ छोटे-छोटे संस्थान करीबन सौ वर्षों तक शासन करते हुए परिलक्षित होते हैं। मुगलकालीन राजनीति का चित्रण तथा स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत में बसे हुए मुसलमानों का राजनीतिक बहुआयामी चित्रण विवेच्य उपन्यासकार ने प्रचुर मात्रा में यथार्थ रूप में करने का प्रयास किया है। मुगलकालीन अनेक बादशाहों ने धर्मग्रंथ कुरान के नीति-नियमों के अनुसार शासन न चलाते हुए वंश-परंपरा के अनुसार अपने मनचाहे कारोबार को ही राजनीति में स्थान दिया हुआ दिखाई देता है। इस काल की राजनीति में ऐशो-आराम, मान-सम्मान, भोग-विलास, स्वार्थी प्रवृत्तियों के साथ-साथ कूटनीतियों के भी दर्शन होते हैं। विवेच्य उपन्यास में मुगलकालीन और अंग्रेजकालीन राजनीति का चित्रण अधिकतर यथार्थवादी प्रतीत होता है। भारतवर्ष के अंग्रेजकालीन राजनीति में अंग्रेज शासन-प्रणाली के द्‌वारा भारतीय जनमानस पर अत्यंत अत्याचार हुआ परिलक्षित होता है।

भारत की लंबी पारतंत्रता के मूल में जमींदार और सामंतों की स्वार्थी, आत्मकेंद्रित वृत्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय राजनीति में यह वर्ग सबसे ज्यादा घिनौने रूप में उभरकर आया है। महात्मा गांधीजी द्‌वारा चलाए अहिंसात्मक आंदोलन की शिक्षा भारतीय राजनीति के द्‌वारा विश्व की राजनीति को मिली हुई सबसे बड़ी देन है। भारतीय राजनीति में रक्तरहित क्रांति का जन्म अनोखी घटना मानी जाती है। आम जनता ने अमानवीय अत्याचारों को सहते हुए आज़ादी प्राप्त की, लेकिन स्वतंत्रता के बाद राजनीति पर पूँजीपतियों का एकाधिकार स्थापित हुआ परिलक्षित होता है। आज की राजनीति में नैतिकता विरोधी तत्त्वों का समावेश हो रहा है। फलतः आज की राजनीति अपने तत्त्वों से हठकर विचित्र रूप में उभर रही है। धर्मांध राजनीति और बढ़ती भ्रष्टता के कारण स्वातंत्र्योत्तरकालीन राजनीति में पतन हो रहा परिलक्षित होता है। इस व्यवस्था के आगे सामान्य मनुष्य दीन और विवश नजर आता है।

उपन्यासकार असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में मुगलकाल से लेकर स्वातंत्र्योत्तर काल तक के सांस्कृतिक परिवर्तन का पर्याप्त मात्रा में चित्रण हुआ है। उपन्यास में ज्यादातर मुसलमान समाज के सांस्कृतिक जीवन का समूचा चित्रण मिलता है। उपन्यास में सांस्कृतिक जीवन के विविध अंगों का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसमें रस्म-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वस्त्रालंकार, अंधविश्वास, उत्सव एवं त्यौहार आदि का समावेश मिलता है। विवेच्य उपन्यास में लोग रस्म-रिवाज और परंपराप्रिय नजर आते हैं। वे आज भी अंधविश्वास पर यकीन करते हैं। रस्म-रिवाज-परंपरा एवं अंधविश्वास को धर्म का दृढ़ आधार दिखाई देता है। मुसलमानों में वस्त्रालंकार एवं खानपान में वैविध्यता नजर आती है। उच्च वर्ग में ऊँचे, कीमती वस्त्रालंकार एवं स्वादयुक्त ऊँचे दर्जे का खान-पान परिलक्षित होता है। वस्त्र और खान-पान में मौसम के अनुसार परिवर्तन दिखाई देता है। उच्च वर्ग के खान-पान में शराब का अनन्यसाधारण महत्त्व दृष्टिगोचर होता है। समाज में धार्मिक उपासनाओं का अक्षुण्ण महत्त्व दिखाई देता है। लोगों के सांस्कृतिक जीवन में उत्सव एवं त्यौहारों का असाधारण महत्त्व दिखाई देता है। हिंदू-मुसलमानों के अनेक उत्सव एवं त्यौहार मिल-जुलकर धुम-धाम से मनाने की परंपरा दिखाई देती है।

नारी संस्कृति की सच्ची रक्षक है, किंतु मुगलकाल और अंग्रेजकाल में उसकी ही ज्यादा विड़ंबना हुई दृष्टिगोचर होती है। स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी-सम्मान की भावना बढ़ती हुई दिखाई देती है। बहु-विवाह प्रथा पर रोक और रखैल प्रथा का निर्मूलन यह स्वातंत्र्योत्तरकालीन सांस्कृतिक विकास में बहुत बड़ी उपलब्धि है। समाज में सीमित क्षेत्र से सही किंतु मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठापना होती हुई नजर आ रही है। सांस्कृतिक जीवन में आयुर्वेद का महत्त्व फिर से बढ़ रहा है। पशु-प्रेम जैसे आदर्श मूल्य गाँव की संस्कृति में आज भी नजर आते हैं। सांस्कृतिक जीवन की आधारशिला संयुक्त परिवार आज विघटित हो रहे हैं। एकल परिवार के हिमायती समाज में नई पीढ़ी संस्कारहीन और पुरानी पीढ़ी आधारहीन नजर आती है। शहरी सभ्यता का गाँव की संस्कृति के प्रति उदासीन दृष्टिकोण दिखाई देता है। बदलते समाज में रिश्ते आत्मकेंद्रित हो रहे हैं। स्वार्थी प्रवृत्ति के साथ-साथ विकृत और भोगवादी प्रवृत्तियों का भी उदय होता हुआ

परिलक्षित होता है। परंपरागत पौराणिक निशानियाँ टूट रही हैं। नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण पुरानी मान्यताओं का विरोध करती हुई नजर आती हैं।

उपलब्धियाँ -

1. असगर वजाहत समाज की विभिन्न समस्याओं पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रोशनी डालना चाहते हैं, ताकि पाठक विचार करने के लिए प्रेरित हो उठें।
2. राजनीति में आ रहे पतन के लिए स्वार्थांध राजनयिकों को जिम्मेदार ठहराकर उपन्यासकार ने उन पर करारा व्यंग्य करते हुए लोगों को वास्तविकता से परिचित कराया है।
3. उपन्यासकार सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को बरकरार रखते हुए खोखली रूढ़ियों एवं जर्जर मान्यताओं को तिलांजलि देकर नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं, जिससे समाज प्रगति कर सके।
4. नारी की वर्तमान प्रगति को देखते हुए यह अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि वह कितने पड़ावों से गुजरकर इस मुकाम तक पहुँची है। असगर जी ने नारी चेतना से उद्वेलित होनेवाले और उसकी प्रगति पर जलनेवाले लोगों को सदियों से सहती चली आ रही नारी की दासता, पीड़ा, व्यथा और उसकी मानसिकता से अवगत कराया है।
5. असगर वजाहत ने 'सात आसमान' उपन्यास में भारतीय विखंड़नवादी धर्म-व्यवस्था, विशिष्ट वर्ग के हाथ में फँसी शिक्षा-व्यवस्था और अन्यायी न्याय-व्यवस्था का किया हुआ वास्तव चित्रण पाठकों को सचेत कर सोचने को प्रवृत्त कर देता है।
6. उपन्यासकार ने इतिहास के द्वारा मुगलों और अंग्रेजों के आगमन से भारतीय गौरवशाली परंपरा पर हुए आघातों का बखूबी से चित्रण किया है। मुगलों के आगमन से हुई सांस्कृतिक क्षति तथा अंग्रेजों के आगमन से हुई आर्थिक क्षति का वस्तुनिष्ठ रूप उपन्यासकार प्रस्तुत करता है।
7. असगर वजाहत जी का विवेच्य उपन्यास लोगों को समूचे मुस्लिम समाज-जीवन से परिचित कराता है। मुस्लिमों के बारे में इतर जाति-धर्मों के लोगों के दिल में जो नफरत और गलतफहमियाँ हैं, वह दूर होकर लोग वास्तविकता से परिचित हो जाएँ इस दृष्टि से सोचने के लिए प्रवृत्त करना इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है-

1. ''असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास : ऐतिहासिकता और आधुनिकता''
2. ''असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में चित्रित मुस्लिम पारिवारिक जीवन''

वास्तव में उपर्युक्त विषयों को लेकर मैंने यथा-संभव शोध-विषय की सीमा में यथा आवश्यक चर्चा इस लघु शोध-प्रबंध के अंतर्गत की है। फिर भी उपर्युक्त विषय पर स्वतंत्र रूप से भविष्य में आनेवाले शोधार्थी शोध-कार्य संपन्न कर सकते हैं।